KANCHAN UTTAM

Sociological

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
					1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28									

JAN 2014 FRI

WK 03 017-348

17

2nd April 2020

1- सामाजिक परिवर्तन से आप क्या समझते है ?

उ=1 सामाजिक परिवर्तन का अर्थ (Meaning of Social change) -

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए वह समूह मे रहता है। सामान्य अर्थ मे व्यक्तियो के समूह को समाज कहा गया है परन्तु विशिष्ट अर्थ मे समूह के व्यक्तियो मे पाए जाने वाले सामाजिक सम्बन्धो की व्यवस्था था जात को समाज कहा जाता है। इस प्रकार समाज का आधार सामाजिक सम्बन्ध है और सामाजिक सम्बन्धो का आधार मनुष्य की अन्त: क्रियाएँ है। मनुष्य की अन्त: क्रियाएँ सतत परिवर्तित होती रहती है। इसलिए समाज भी परिवर्तित होता रहता है। परिवर्तन की यह गति कुछ समाजो मे मंद, कुछ समाजो मे सामान्य और कुछ मे तीव्र होती है। तदनुरुप ही समाज मे होने वाले परिवर्तनो को सामाजिक परिवर्तन की संज्ञा दी गई है

According to Merrill and Eldredge, "सामाजिक परिवर्तन का अर्थ यह है कि लोगो की अधिकतर संख्या ऐसी क्रियाओ मे संलग्न है, जो उनसे भिन्न है, जिसमे वे कुछ समय पूर्व संलग्न थे। समाज प्रतिमानित मानवीय सम्बन्धो के एक विशाल एवं पेचीदे जाल से बना हुआ है, जिसमे सब लोग भाग लेते है। जब मानव - व्यवहार रुपान्तरण की प्रक्रिया मे होता है, तब वह प्रकट करने का अन्य ढंग है कि सामाजिक परिवर्तन घटित हो रहा है।

Scanned with CamScanner

18 WK 03 018-347 JAN 2014 SAT

सामाजिक परिवर्तन की मुख्य विशेषताएँ

1. सामाजिक परिवर्तन में अनिश्चितता (uncertainty) होती है।
2. सामाजिक परिवर्तन अनिवार्य (Inevitable) होती है।
3. सामाजिक परिवर्तन की गति असमान (uneven Rate) होती है।
4. सामाजिक परिवर्तन में सार्वभौमिकता (universality) होती है।
5. सामाजिक परिवर्तन सामाजिक विकास (Social Evolution) होती है।
6. सामाजिक परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है (continuous process) है।

सामाजिक परिवर्तन के उत्तरदायी कारक -

1. भौतिक वातावरण (Physical Environment)
2. जैविक दशाएं (Biological conditions)
3. प्रौद्योगिक व्यवस्था (Technological orders)
4. सांस्कृतिक व्यवस्था (Cultural order)

सामाजिक परिवर्तन में बाधक तत्व -

1. परिवर्तन से डर (Fear from change)
2. सांस्कृतिक जड़ता (Cultural Inertia)
3. निहित स्वार्थ (vested Interest)

19 SUN

4. पृथकता की भावना (spirit of Isolation)

07/04/2020

शिक्षा के आधुनिकीकरण से आप क्या समझते है ?

शिक्षा का आधुनिकीकरण (Modernization of Education) -

देश को आधुनिक बनाने के लिए सबसे पहले जरूरी है शिक्षा का सार्वभौमिकरण पहले शिक्षा का मात्रात्मक पक्ष बढ़ाना चाहिए फिर उसके गुणात्मक पक्ष पर नजर डालना चाहिए। ग्रामीण पाठशालाओ मे शिक्षा का मान अत्यन्त निम्न है, इसके फलस्वरूप बेरोजगारी बढ़ रही है। सभी लोगो को प्रभावशाली शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। जिससे कुशल विद्यार्थियो को तैयार किया जा सके। जिससे देश को कुशल व विशेषज्ञ प्राप्त हो और देश आधुनिकीकरण के विकास मे योगदान दे सके।

कोठारी कमीशन (1964-66) ने आधुनिकीकरण के ऊपर बल दिया था तथा शिक्षा को इसका प्रमुख साधन माना। शिक्षा सामाजीकरण का आधार है जो नये मूल्यो को दिखला सकती है। शिक्षा आधुनिकीकरण के बाधक तत्वो को नई दृष्टिकोण के द्वारा बदल सकती है। शिक्षा को आधुनिकीकरण बत बनाने के लिए शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक बनाना होगा

आधुनिकीकरण की विशेषताएँ —

⇒ आधुनिकीकरण एक गतिशील प्रक्रिया है।
⇒ एक परम्परागत समाज को आधुनिक समाज मे परिवर्तित करता है।
⇒ देश को उन्नत विकासवान तथा नया बनाता है।
⇒ यह एक प्रगतिशील प्रक्रिया है।

Scanned with CamScanner

04/04/2020

21 WK 04 021-344 JAN 2014 TUE

1) सामाजिक व्यवस्था का अर्थ बताते हुये व्याख्या करे ?

उत्तर सामाजिक व्यवस्था का अर्थ (Meaning of Social Order)

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ विविध धर्म, भाषा, जाति, सम्प्रदाय के लोग रहते है, जिनके अपने भिन्न-भिन्न समाज है। प्रत्येक समाज की अपनी अलग संरचना है। इस संरचना का सृजन विविध इकाइयों द्वारा होता है। इनमे व्यक्ति समूह, जाति, वर्ग एवं संस्थाएं आदि सम्मिलित है। इन विभिन्न इकाइयो मे अन्तर्निहित व्यवस्थित सम्बन्ध को ही सामाजिक व्यवस्था कहा जाता है। सामाजिक व्यवस्था के अर्थ को स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वानों के मत प्रस्तुत है —

1- टालकॉट पारसन्स (Talcott Parsons) ने सामाजिक व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए लिखा है, " सामाजिक व्यवस्था आनिवार्य रूप से अन्त: क्रियात्मक सम्बन्धो का तानाबाना / जाल है।"

2- मैक्स वेबर (Max Weber) ने सामाजिक व्यवस्था के विषय मे लिखते है, " वह ढंग, जिसके द्वारा समुदाय मे भाग लेने वाले विशेष समूहों मे सामाजिक सम्मान का वितरण होता है, सामाजिक व्यवस्था कहलाता है।"

Scanned with CamScanner

JAN 2014 WED WK 04 022-343 22

3- जोन्स (Jones) ने सामाजिक व्यवस्था के विषय में लिखा है, "सामाजिक व्यवस्था वह स्थिति है, जिसमें समाज की विभिन्न क्रियाशील इकाइयाँ परस्पर तथा समग्र समाज के साथ एक अपूर्व ढंग से सम्बन्धित होती है।"

परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समाज की विभिन्न इकाइयों में परस्पर क्रियात्मक सम्बन्धों की व्यवस्था ही सामाजिक व्यवस्था कहलाती है।

2) सामाजिक व्यवस्था की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर- सामाजिक व्यवस्था की विशेषताएँ —

1. समाज के व्यक्तियों / कर्ताओं की पारस्परिक अन्तः क्रियाओं के फलस्वरूप सामाजिक व्यवस्था का सृजन होता है।

2. सामाजिक अन्तः क्रियाओं की सम्बद्धता को सामाजिक व्यवस्था कहा जाता है।

3. सामाजिक व्यवस्था उद्देश्यपूर्ण होती है। इसी से सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

4. सामाजिक व्यवस्था गतिशील होती है। इसीलिए सामाजिक व्यवस्था में समय के साथ-साथ परिवर्तन है।

Scanned with CamScanner

23
WK 04
023-342
JAN 2014 THU

DEC 2013

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
						1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29	30	31					

5- सामाजिक व्यवस्था संतुलित एवं क्रमबद्ध होती है।

6- सामाजिक व्यवस्था सांस्कृतिक परंपरा पर निहित है।

7- सामाजिक व्यवस्था वह होती है। जिसमें समाज लक्ष्यों को प्राप्त करता है।

END

M T W T F S S M T W T F S S
FEB 2014
1 2 3 4 5 6 7 8 9
10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23
24 25 26 27 28

8/04/2020

JAN 2014 FRI WK 04 024-341 24

प्र०-1 सामाजिक विविधता क्या है। इसकी अवधारणा देते हुए समझाइए ?

उ०-1 **सामाजिक विविधता (Social Diversity) :-**

भारत विविधताओ का देश है। यहाँ अनेक धर्म, भाषाएँ, जातियाँ, जनजातियाँ एवं संस्कृतियां अतीतकाल से अस्तित्व मे थी और संगठन नही था। वे परस्पर एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए परस्पर लड़ते रहते थे, जिसका लाभ विदेशी आक्रमणकारियो ने उठाया और भारत को कई बार विदेशी आक्रमणकारियो से पराजित होना पड़ा।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के उपरान्त देश मे भारतीय संविधान लागू हुआ और देश मे लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति को अपनाया गया। भारतीय संविधान की प्रस्तावना के अनुरूप देश मे लोकतंत्रात्मक, धर्म निरपेक्ष, समाजवादी समाज की स्थापना का लक्ष्य रखा गया, जिसमे स्वतंत्रता, न्याय, समता एवं बधुत्व की संवैधानिक वचनबद्धता है ताकि के अनेक धर्मो, भाषाओं, जातियों, जनजातियों एव संस्कृतिओं की विविधता को सुरक्षित एवं संरक्षित रखते हुए देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया जा सके। यही देश की सामाजिक विविधता की अवधारणा है।

सामाजिक विविधता के रूप —

1. धार्मिक विविधता
2. भाषायी विविधता
3. जातीय विविधता
4. जनजातीय विविधता
5. सांस्कृतिक विविधता

Scanned with CamScanner

प्र० 2

सामाजिक विविधता के प्रकार –

1- धार्मिक विविधता (Religious Diversity)
2. भाषायी विविधता (Linguistic Diversity
3- जातीय विविधता (Diversity in castes)
4- जनजातीय विविधता (Tribal Diversity)
5- सांस्कृतिक विविधता (Cultural Diversity)

Scanned with CamScanner